



ASHA ARCHIVES

कदा॥ वाक्ताई यं धर्मकं स गथासर्वं निलकुटी ॥ दनं कदा न खासु गं
 धवर्धुं दैतेश्च जदि किं ॥ युधमायुयनि कुत यथा न कदा मादि (८) न
 हीनां सुखान्न वमीक्षां लक्ष्मि (१०) किं यथा जनं ॥ न प्रमाने वज्रिया का मेधा
 समुदागी गुल ॥ न न वशां यमु मासु स ४ यं वि की किं त ॥ वासरा
 (१) गुनानीक्षां दकिं (१) यून्यम्यच ॥ निदृष्टं लक्ष्मि गं वा समुदवच

जतिवक्ताई, नाथः कनकार्ये गल्ल ॥ दीर्घवाक्ये नयेऽथर्था, नमासाय चित्तं स
स्वं ॥ उभाविष्मलान्धनधन्यताग्यः, शिवाविष्मलान्धनययुगवाऽथ ॥ कर्षी
विष्मलान्धनयुगदावा, यद्विष्मलऽङ्गारं सस्वीत्याह ॥ चक्रम्भरुनसा
साग्यं, दन्तम्भरुनसाङ्गनः ॥ न्वचाम्भरुनसाग्यं, योदम्भरुनवाङ्गन
॥ गूकर्मकाथिनीरुक्ती, यादोवाङ्गनकासलो ॥ यस्यावाहिवयादोच, स

नवः सत्यमधक ॥ दीर्घलिङ्गसदाविर्दं, कुललिङ्गसदाऽखितऽङ्ग
लिङ्गसदाग्यं, दम्बलिङ्गसदायति ॥ यमाहलकृष्णार्कं, समुदन्तु
गागुर्ग ॥ ॥ वृत्तिसामुद्रिकं यथमयमाहमध्यायः ॥ ॥ गूकऽयव
यवकासि, दुरुवयवमूर्तं ॥ कगायादतल्लवम्भ, यथामूर्तं यगावि
र्ग ॥ गूम्बदनीमृदुन्वया, कसलोदलसन्निहो ॥ भ्रूयुर्गुलीयर्गयुक्ता

मिनाविलदितातथा॥ कनिष्ठगुलिमूलाच्च, लस्यागकृतिगर्जनी। मूवि
 क्रिष्णानिचर्वादि, द्वागमायुर्विनिर्दिष्टत॥ लयाति४वदूति४वदूति४
 लं, मूल्याति४धनदीनता४॥ लयाचगुदूर्यसोत्थं, वदूलयादविदूतं ४
 ॥ मूगुक्षाद्वेसधमू, यवायम्यविवाजग। दुत्यमरुक्करोजाच, म
 नव४मूखमधरं॥ मूतिमध्यातिकीर्तिष्य, वीकातातिमूखीतथा॥

मूर्तिनिष्ठप्रदृष्टिस्त्या लमन्तायुर्विनिदिष्टात् ॥ नश्यमुदीकर्मकाभः ॥ स
 रिताचनः ॥ १॥ कूर्मोन्निगच्छननः ॥ २॥ पुनूयायथिवास्तुता ॥ ३॥
 ल्याकावस्तुता ॥ ४॥ वक्ता ॥ ५॥ जिनायुता ॥ ६॥ यस्वदे ॥ ७॥ यस्वदे ॥ ८॥
 नः ॥ ९॥ नः ॥ १०॥ यम्यायादतललया ॥ ११॥ कूर्मोन्निगच्छननः ॥ १२॥
 १३॥ यस्वदे ॥ १४॥ यस्वदे ॥ १५॥ यस्वदे ॥ १६॥ यस्वदे ॥ १७॥

५४ स्वरागिनः॥ किञ्चन विपुली गुह्यं तनवा धनममिनः॥ उन्नतं च
समं न्नि (गुह्यं) ॥ ५५ मिने ॥ मुखरागिनः॥ वृत्ते गां वनश्वे वक्तो वं गुह्यं वा
मादि (५६) ॥ यस्यायदशिनी दीर्घा ॥ गुह्यं च यत्किञ्च मातु ॥ मीनागलः
गंगासायि युवधाना रुमंडाय ॥ गार्गा वा मृयक यस्या युक्ता वा यथमा
वासावेदस्त्री रुव रुस्य गीर्विद्यान्के लरु ४ यिर्य ॥ मधोमाया तु दीर्घा ॥

या गार्गा दानि विनिदि (५७) ॥ सावेदस्त्री रुव रुस्य गार्गामो र्यां च वि
न्दति ॥ गृन्तोमिका र्यां दीर्घा र्यां विद्या गार्गी रुवन्नेव ॥ सावेदस्त्री रुव
रुस्य गीर्विद्यान्या नदाविकी ॥ यस्यायदशिनी मूला गुरुथावक निधि
का ॥ वालस्य मृयक माता समुद्रवचनं यथा ॥ गुह्यं ली मधुमायस्या
मनुष्या च मातु ॥ पूर्णां च जनयन्मायि गृन्त्या यु (५८) वजायक ॥ ५९

कुम्भेऽनश्वरेणवतिरुयति॥ ॥ ॐ निसामुदिकेनखलकलेरुमी
यथाय॥ ॥ मङ्गायामुदीद्यायुः समेदःखमखातिवास्तन्य
वापिडुनिदब्धः ॥ यथा नैर्गन्धकूजय॥ वापिलक्ष्मी ॥ ॥ नवा
॥ ॥ कवमन्त्रमुनिर्व्यवधनरागिनी समेदवतिरुन्त्रमुयुव
वा॥ सखरागिनी ॥ गुल्फेसुसादिवाकावध्ववधवधनरागिनी

वकेमुदीकेनानिर्णयामलेनत्रयत्यगा॥ गुल्फलक्ष्मी ॥ ॥ रुवेग
ज्याधनीनयैष्ययवसमादि॥ ॥ मङ्गाज्यामवाजाताजायकना
कुम्भेय॥ दीद्यज्याकुन्ज्याधातनःयविकीर्तिगा॥ वामे
वगथागंधनरादाविदरागिनी ॥ जीवकसमज्याष्यलक्ष्मीकुवा
नमङ्गाय॥ कुलीज्याष्यशूभाष्यजीयुंजीक्तिमानव॥ ॥ डवुं

ध्यानवाञ्छुच निर्युगाग्यविवर्जिता॥ काक ऊँ ध्यानवाञ्छुच गयी वाञ्छु
 विनिर्दिष्टा॥ ६४॥ स्वित् ४ काक ऊँ ध्याग्य ऊँ धनकृष्णमयान् ॥ ऊँ धन
 कृष्ण ॥ ॥ नामैकनरुवडाजा द्वाष्ट्यां रुवति यक्षिता॥ ॥ विनिर्दिष्टा ॥
 विचित्राका चरुति मुद्रविडगा ॥ नामनरुष्ण ॥ ॥ ॐ निसामुद्रि
 कं वापि लोकावेतु ॥ ६५॥ ॥ ॥ ॐ सरुमि सतागव्य यूवव

स्वेन वाधियाः ॥ वृषमिदं सुदीर्घा गतिता गवतातवता ॥ ऊला मिम
 दृष्टीयाच काका वृकसमाचया ॥ गतिद्वयविदीनानी ॥ ६४॥ स्वित् ४ काक
 यैकवा ॥ ॥ नामैकनरुवडाजा द्वाष्ट्यां रुवति यक्षिता ॥ ॥ विनिर्दिष्टा ॥
 नामनरुष्ण ॥ ॥ ॐ निसामुद्रि कं गतिनरुष्ण
 यैवमाध्याय ॥ ॥ ॥ नूनयथा न्यजान्त्या स्थिवायुमिन्द्रजानक

लग्नजानूननव४ कश्चि, हीनजानूननराग्यवान्॥ हीनजानूननवायसु
वेन्धनंनरुगेनव४। जानूमानरुलाकावा, दू४खरावावगाहनं॥
जानूलकधी॥ ॥विश्रमद४ द्विगानिह्य, निम्मासिमुपवासिक४॥ वृ
षावृकसिनावृष्य, नव४ सर्वगुहान्वित४॥ डवृष्याविकटान्वित, स
गवृकसीधुवन्त्रा४॥ स्कृन्नागसध्वनिस्ताव, गनवाधनरागिनशाका

यनिम्मासननिम्ब, डवृविस्फुटवृगुले४॥ ००००कागाकटीशान्त्रसु
धुवृकलि(शायम॥ डवृलकधी॥ ॥दकिधोवृकलि(गन, यूरुवा
नृगवन्त्रव४। वासावृकनलि(गन, नव४ कन्याययागवग॥ स्कृन्ले
पृष्ठनलि(गन, दु४खिगननवास्मेगा४। अशुकिवृगुलेलि(गे, यूरुवा
धसुखावृह॥ गवृककधावलि(गन, सगवन्त्रधिवीयनि४। द्विधावा

धनवर्तस्य सकथावासुदक्षिणा॥ निर्गलकक्षी॥ ॥ मीनर्गधनमुक्
क्षधनवान्सकवन्तव॥ रुविर्गधनमुक्क्ष गवाशो जायतनव॥ म
धूर्गधनमुक्क्ष नवस्त्रीजनवन्त्रगा॥ यक्षर्गधनवद्गुप्ता मदिर्ग
धननृपति॥ कोलागधननृपति॥ ययर्गगनेनृपति॥ लोः
कागधनवन्ति॥ मीसर्गधनगत्कव॥ यस्नीवतार्गधन

वर्गधनदक्षिणा॥ कर्गधनमुक्क्ष यवृषादह्णगवत॥ क
वर्गधनमुक्क्ष नवादाविदगागिन॥ म्मावर्धुगवद्वर्धु येस्य
स॥ स्याधिव॥ यथावर्धुगवन्मृक गवदाजानसंजय॥ म्मावर्धु
नमुक्क्ष दक्षिणागीगवन्तव॥ गंधवर्धुविजलकक्षी॥ ॥ समया
दायविष्टस्य महीस्य शक्तिमरुति॥ म्मावर्धुदक्षिणागिर्ग दायिः

ज्ञानवर्धनीति ॥ १ ॥ समयादायविवक्ष्य सन्ने स्य सन्निभदिनी । ॐ ॥ धन
 नैविजानीया । समस्वी गोगवान्नव ॥ १ ॥ सिद्ध व्याख्य समं यम्ये । कर्म
 सवतिमरुन । गोगवान्नमरुविह्वय । कथातुवगमरुन ॥ १ ॥ गौं उ
 लकृष्टं ॥ ॥ गौवर्क सट्टर्कवर्क जायगयस्य । धननिर्ण । धनवर्क
 गवर्क । धनवर्क सनवर्कवर्क । १ ॥ सवर्कवर्कवर्क । १ ॥ सवर्कवर्कवर्क । १ ॥

कयते ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥ यार्थिवागवत ॥ यवालसह
ननक ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥ नाजाननीविजानीयात ॥ जेककर्ममकी
वले ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥ जेनयद्वद्वधक
न्या ॥ दू४स्वित्तसदागवत ॥ (लोनिष्ट) सतिरि ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥ यवालसह (लोनिष्ट) सतिरि ॥
य ॥ सगवद्व ४ किमनिष्ट ॥ धनहीनानसं ॥ य ४ ॥ नकवकध ॥ ॥ वि

कीर्णमासलेनिम्ब, सक्तियुक्तं यज्ञग्नयः॥ कृष्णवृक्षे निर्मासं य
वीमक्ति नगसूखी॥ कटिलकृष्णं॥ ॥ वृत्ति सामुद्रिकमुक्तलकृष्ण
सक्तमाध्यायः॥ ॥ विमिर्णमासनीनिम्ब, वक्तियुक्तं यज्ञग्नयः॥ ॥
निर्मासार्कटिकावक्ति, यवीमक्तिदृश्यगानेन॥ सिद्धया यज्ञसमायवी
कटिलकृष्णनायिका॥ श्रीकृष्णानवकुल्यागा, कटियवीनगमुना॥ ॥

॥ कटिलकृष्णं॥ ॥ सुगन्धवानवाधन्या, सक्तवादनमठव। सक्तक
सुदृष्टयात्र, सक्तवन्याधिवाकवत॥ व्याघ्रादवागऊयति, धन्या
दवनवाधस॥ सिद्धादवनयति, धन्यायसक्तद्विवात॥ उदकसक्त
॥ ॥ वक्तुलायदिगंलीवा, नागीवृसायदक्षयः॥ उक्तोनाद्विक्तव
नागी, सर्वदादृश्यिगा, सक्तवत॥ नाहिलकृष्णं॥ ॥ श्रीवक्तुयति॥ ॥

कथं वाङ्, नाजानमु विनिर्दिष्टम् ॥ गुजलकर्म ॥ ॥ यस्य मीनस
मात्रं वा, कर्ममिदं सदा एव त्। धेनाध्यासविरुद्धं वा, वदूयुक्तं
संज्ञाय ॥ कथमस्मिन्मकस्य, तस्य ही वृद्धतावर्क। संयुक्तं चिपू
नक्षत्रं ॥ याहिमूलं मित्रं नृणां ॥ मूलान्यपि यस्या दह, न स दहते यत्
यून ॥ चामनं वीतिर्येवापि, चकवन्म स उच्यते ॥ स्वमि कर्तुं न सो ग

१३

ग्री, मीनसर्वं यूजत। जीवन्मर्वं रगान्मन्त्री, नत्राशायामकनर ॥ धाजवर्क
कृष्णं रू, सख्यपद्मादयम्कृतं। याहियाथ वृद्धं धीमं, यस्यामो जीव
ति ॥ यूमान् ॥ शाकिनामलदं दनि, धनं यव गदायमा। यस्यारुमर
वन्नेखा, नाजानन् विनिर्दिष्टम् ॥ दकि (हयाहि) रं गुह, यवा यमा
गुहं भग। सर्वविशय धनार्यं, वृद्धिवा न्म एव न्न न ॥ द्वा म्यादि ज

वसन्ताख्यां वाजसक्तीधनीवृद्धेऽसहिर्वधयः (६६) निग्धयः
यावत्तु॥ यदि तः याहिपृष्ठं गुणाधीकतवैरुर्ल। ग्यागयः (६७) न न
हीनाः ॥ सूर्याय सधूरिगलाः ॥ शूष्माधीयवद्यम्या सोगाग्याजस
मूलकाः ॥ कीनायववयाकुर्ल विषमागागकः ॥ रुनाः ॥ विवधुर्ल
ठिकाकुषू नीलास्यस्थनाकुर्ल। कुर्लस्यपन्नवालया विवधुर्ल

ननसंगयः ॥ कुदतायुः पादया वीनासंविचमर्ययत। रधमायान्क
नयायुः ॥ यदगिनीधनादीका। यव्वमन्तिपुः ॥ यके। शिंयस्थत्रियं
वान्यथा ॥ सधमायः ॥ कानिष्टायः ॥ यल्लयया ॥ गावका नदि
लास्यम्य ॥ मि यस्तावन्मगाधनः ॥ गूनासिकां यूनः ॥ (६८) धनवीच
वदानवः ॥ मुखिनेमयवादीच संपाका कनिष्ठिका ॥ यम्यायानिग

लंलया कतिष्ठा मूल गमिनी । सुवर्णवत्त वाजुषी दायती मावर्ष ६
य॥ मूनाकी कान्त लयाया कतिष्ठा मया शदाधिका । धनवृद्धि कली
यूसा सा मायका वदुक्त ॥ उर्ध्व लया मनिर्वध दग्ध सा येव यवः ॥ ७
धा । मंगुष्टा मयधी सोख्या वाकुला सा यका यत ॥ वाजा वाज मदा
क्रावा गर्जनी गत लयाया । मध्या मायौ गत या कान्ति प्रकूल प्राय

दयदा । मयस्थ लया सुर्वाम्य मासांगुष्टा ^{नि}गतां गत ॥ भिद्यन्मंगुलि म
धमनि । दया संवय रुगव । नानि किं दायै कानि त्यागिणी वक्तु गान
व॥ गुलागम थवा वदौ कल मध्या गुह्यग । वाहि ऊँ जाय गत
म्य यूवम्य न संजाय॥ उर्ध्व लया कवयनु लया मंगुल गुह्य
। नाना शाग गुभी लायि समुद्र वचनै यथा॥ मूवर्णा दक्षि (हारा) ग

संगुलीगुलिपर्वम् । तामसिगम (ध्रुविषाणुं गयवाञ्छानपासु सा ४॥ न
धेसु विदव न्याना (ध्रुवापानवतानव ४॥ म्मीगवयुससुच सुशा
जनन्याश्ववगु । शिकाधलखयाहीन सुगलंदूषलादिना । वसु १३
नारुसुजागेन युवषस्यकुषीवल ४॥ ॥ नूगिसासुदिकरुसु
लकुर्धदशसाधम ४॥ ॥ गीवासुवर्तुनायस्या यूर्ध्वकूरासना

श्ववगु ॥ यार्थिव ४ सविगुक्क या धनधन्यन्यसंकुल ४॥ स्वयं गीवायुस
मन्ति (ध्रुकाष्टुगीवकनगु । दीर्घगीवावकगीवा निखिगीवावित्तर्कि
ता ॥ गीवा ॥ ॥ वृषमूर्धधगजुक्क धाफालर्कधोचयनवा ४॥ सर्वतया
र्थिवाक्क या सदाशागमसदाधना ॥ कंधलकुर्ध ॥ ॥ वदतंसिदनीय
स्या धर्महीनसदाश्ववगु ॥ मृगसुखकयकुस्थ रतवाइ ४ स्व

शागिनः॥ कलालवकुवदना, पुनूवाधनकोनगा॥ मूजावकुनवा
ऊरु, दू४ स्वदाविदशागिनः॥ ॥ ॐ निसामुदिकमूखनकृष्टं उका
(अध्यायः॥ ॥ यम्यगुह्येवसंपूर्ण, यद्वयसमयशो॥ शाग ११
वोमिषीयाः (अथ, सर्वविश्वधव४ मृता॥ ॥ सिंहयायगऊन्दाष्टी
कयालोसदः (अथदि। कृषिशानीशवनिर्ण, वदूयुष्टं अजायत

॥ गतलकृष्टं॥ ॥ वकाधनानुयति४ म्या, दय, वचवदू४ खित॥ मूला
शामथूलार्याच, नवाम्ग्यनदू४ खिता॥ वूठयूययनी काम, दने
नृपतिचमृता॥ अकवानवदेनाऽथ, निगीकृधसुखादिता॥ रुमि
दकास्ववदेता॥ निगुदकाऽथचनवा॥ सर्वगधनिनाहूया, समू
दवचनीयथ॥ कलालेविलेवुष्टेद्वानदू४ स्वशागिनः॥ दकि (अन

तदन्ताऽथ सदाशागमदावन्ताऽ॥ कृष्णदेवुदा लेदन्तेऽ॥ जालिमाधी
जमन्तिरेऽ॥ ५४॥ खिराऽ॥ सन्तवाहूयाऽ॥ कीर्त्तनवन्तकावकऽ॥ ५५॥ कृ
मावीगतेवन्तेऽ॥ दन्तेमूर्खकसन्तिरेऽ॥ माहाग्यमीलीनेदन्तेऽ॥ विशावा
नवदन्तुले॥ ५६॥ कदन्तकदन्ताऽथ यनवाहूयन्तकाऽ॥ मूर्खकासम
दन्ताऽथ नयायायविकीर्त्तिताऽ॥ द्वाविंशदशनेवाजाऽ॥ शांतीस्यादः

कहीन गा ॥ विष्णु गामुखदू ॥ स्वांश ॥ तता की मा मुदू ॥ खिगा ॥ दन्त लक्ष्मी
॥ कृष्ण जिह्वा शवदास ॥ सनबाद ॥ स्वसाधन ॥ शमलायामु जिह्वायी ॥ स
शवन्त्यायकावक ॥ मूल जिह्वा नवम् ॥ नवानुसुतशविन ॥ १५४
जिह्वा नवायामु ॥ सोयाचानविवर्जिता ॥ यक्षयगसमाजिह्वा ॥ शोभवा
मिष्टशानन ॥ नका जिह्वा शवशमु ॥ विशाल श्रीमवायुयातू ॥ जिह्वा न

गङ्गा न १॥ सुतनामानवायच धर्महीनासमादि (१) गङ्गा ॥ सुतवकाचकी
 नाच नाडिका मुखमध गङ्गा नमस्वर्द १॥ स्वगाङ्गा या कुलहीलविवर्द्धि
 गा १॥ नासालक्ष्मी ॥ ॥ वकाकधनवका १॥ याद्याका १॥ रकायमा १॥
 १॥ कुर्वताका सदा १॥ स्वी मृगाका १॥ लक्ष्मी १॥ ॥ विजल १॥
 सजगा १॥ रवन्नि यूनसाधमा १॥ मधूवानकलाका १॥ सर्वगमध

२०

मासगा १॥ स्वानुलक्ष्मी १॥ ॥ यगवाका १॥ वकसग १॥ गवाका १॥
 रगानिर्ग, ककवाका १॥ बा १॥ नलक्ष्मी ॥ ॥ वि (१) ययूनवका १॥
 १॥ वामधायदीकत ॥ यूर्ताकवामननाक, बा १॥ नवविर्वद १॥ ॥ व
 लक्ष्मी ॥ ॥ ॥ कुम्बक १॥ रवडागी दीर्घक १॥ ॥ मधमा १॥ वामक १॥
 मनुष्याय सर्वगद १॥ स्वगानिन १॥ क १॥ लक्ष्मी ॥ ॥ ॥ कणाकारगल

प्राप्तं श्रीनादीनालुदूशिवराशः। मूधमाना घटाका वै, पापीनास्वयूरूपेन
॥ वियूलनललाटेन, मूल्यायूरुवर्तनवः॥ मूधमोचनललाटेन, शव
नि यथिवीस्वरा॥ मूल्यानललाटेन, मूल्यायूरुवर्तनवः॥ उन्न २१
गतललाटेन, धनाधमूनवासुगा॥ विषमनललाटेन, विषमा
ऊर्जवानेवा॥ स्ववकर्मवतानिर्णय, पापुर्वधर्वधनी॥ शिष्टं लंकू

कलकृधायासा शिवास्तीनिसवचकं॥ ददि (ह) दकि (ह) ग (ग) यस्या
वर्त्मसमक के। तस्यनिर्णयजुयक्त कमलकलवर्कनी॥ यदि स्यादकि
(ह) वाभा दकि नावासयावक। यस्याकालं ततकस्य, वा (ग) मनामय
संशयः॥ मूवर्कदकि (ह) यूसी, मूहसवामजुयदा। मूहनीसूव
हलकी, सनवासककावह॥ कलकलकी॥ ॥ दुमानललाटेनि

मूर्खं यथूनीसुखशानिनी। गीरीवाहियुमकीहि, नासि सख्यं मूर्खं
गथा। नासिकानेगुदकाध्व, कवकलूदिनातवा४। समासमनीवे
हूया, विषमाविषमनरु। गन्यधवाहि स्वमीस, नरेध्वगक
नृध॥ यागमाजाधनीशग, सुखथाविन्कुमाकवग। कलदक्तनखा
धूमी, गवन्ति सुखदुगव४॥ की० यस्तु गथा ऊं द्यो दुस्वलिगंतयू

निर्वाणाय, ललाटाय, स्यादृशः ॥ ००५४ वनं विजानीयात्, यमदाऊन
वन्दे रा॥ यंचरि॥ ६॥ तस्मिन् दिष्टं, नृणां तिसृषु न स्मृता ॥ ००५५ चरि॥ ६॥ वदितं
वर्णादि, द्वाभ्यां स्याद्विंशति द्वयं ॥ ००५६ चरि॥ ६॥ ललाटम्, समाकक्षुर्गिरि ॥ ००५७
चरा॥ ६॥ तस्मिन् दिष्टं, तस्मिन् दिष्टं, तस्मिन् दिष्टं ॥ ००५८ चरि॥ ६॥ ललाटम्, समाकक्षुर्गिरि ॥ ००५९
विंशति॥ ६॥ यद्विंशतिर्गिरि ॥ ००६० ललाटम्, समाकक्षुर्गिरि ॥ ००६१ चरि॥ ६॥ ललाटम्, समाकक्षुर्गिरि ॥ ००६२

चलाटलकक्षी॥ ॥ कूटिले मूटिगे नूके १ स्कुलाम्या फुक्क ना नवत । दु
१ स्थिताय नूषाय च कुधाय च विधीति ॥ मूटिटे कचित् नूषो १ मूले
१ के (डोन क्षीत्त वा १) १ मूले म्बे म्बे थ क (डो) जायगे धन दायमा १ ॥ वि
बलामधु नाकक्षी म्बिग्धा यमवमन्तिना । मधुवधू श्यथ कक्षी म्बे न
वाम्बे रोगिन १ ॥ वामावर्त रुवर्त म्बे वामायी दिडिम म्बे क । दिव

जिने । वक्तुं जिह्वा रुचिदन्त्या, यादियादरात्तनं वा । पृथूनायादिया
 कन्ध, कन्धाद्यदीर्घजीविनी ॥ निश्चयदन्ता गुहादन्ता, मूलायाम्नि
 ध्वलावता ॥ नत्रातिदुस्वदीर्घश्च, मूलकृष्णश्च निर्दिता ॥ ७००॥
 मूडिकेष्टम्, समुद्राद्यसमूहव । ७०१॥ (७०१॥ नित्य ० गावायि, मज्जाना
 तिगुहागुही ॥ ॥ ७०२॥ तिसामूडिकमूखलक (७०२॥ यूरवलेकृष्ट

घादः (॥ अथाय ४ ॥) ॥ ॥ नूथकीलकहं ॥ ॥ ववारु सामूडिकता
वदीय, यवासवशीयति वनकायान्। गम्भीरिणामुहिति वीर
स्यकलीलकः (॥ अथावमरु विधास्य ॥) ॥ गणववारु ॥ मिश्रा
नं गायगानूना सुतश्चोक्तमाया ४, योदीसमायचिका वावूनि मूरु
गुर्लु ॥ शिष्टं गुर्लिकमलकानि कनोचयस्या, सा मूरुदं यदि तु

१५

वाधियति न्निमिक्तं ॥ मल्लिकः (॥ अथ यववदरु लासितिक्रा, वम्भ
दिनो मूरुगानोचव (॥ अथ पक्षका ॥) ॥ अथ वामनीरु गोविहि वमूरु
रु, ॥ नूद्ययं सममनून्व नसीधियदहं ॥ उवूद्यनीकविकवयुतिमा
वनीमा वमूरु यण सदहं वियूनीच गुर्लु ॥ (॥ अहीललाठ मूलक
सं समनूनीच, गूरा मल्लिकवियूनी वियमागताति ॥) ॥ वीहीधुमा



सायविगानिर्गया गुनधरुवसनाकनायं । नाशिर्गहीनाविपूर्ण
 गनीती यदकिं धमवर्ग गगायुहाका ॥ सधर्मि याम्नी वलिर्गमम
 वर्थरुहोद्यनोयवियूलोक धिनाचूत्रमो । यामयवर्जिगसत्राम् २७
 दूवीगनानी गीवाचकवृत्तिविलानुसूखानिधरु ॥ वधुकाजीवक
 सुमायमा १ धवासीसत्रावृत्तिवविम्वयदगू । कन्दयय्यलनि

ग१४समाधिगा, याविगीयकि सुख्यातिगार्थदा१ । दकिं धमयूकम
 ग००यवियूरुहस, वधुषगाविगमदीनसनल्यसीखी । नासास
 मासनयूठावृत्तिवायुहाका दृङ्गीलनीलकदलश्रुतिहात्रिही
 च । नासंगतनातियुथलानेलेय, धमकुरुवीवालहाधकवर्क
 । मूर्द्धन्दीसका नमलामहायी, धमकलेलाटननरीनरुंगी ॥ कहु

यन्ममयिर्युक्तं नीसुतं, शम्यते मृदु स मे समाहिर्गं मिष्टनीलम्
 दुर्कचिरोक्तजा, मृदुजा ४ मृदुजा ४ समीक्षिव ४॥ हृन्म वाहानि
 वाजिकीजननथमीदृकयुथयूरि, मालिककुलचामजीनु २३
 गयवे ४ (भवश्च) जमाभव ४ सन्यासस्ति कथदिका यजनक ४
 र्गस्वातयर्गवृज ४॥ यादयानि कलथवावनि यतं यानि चिथा

वाहिनात् ॥ निगृह्य मतिर्वधनो गवधयद्यगशायसी, कथो न्ययनिथा
 विगसुदनेविकयूयर्वागुली। तनिस्तमतिनान्तर्गकवसर्गमूलखा
 न्तिर्ग, कथार्यविधर्वाचिर्वसगसुखार्थमं शागिनी ॥ मध्यागुलिं याः
 मिनर्वधनात्, वर्यागगायाक्षिगलंगनाया ४। उद्धृष्टिगायाद
 तलं थवाया, यूसाथवावाश्च सुखायसास्यान् ॥ कनिष्ठिका मूलरा

वोगतायाः पदशिनीसधुमिकान्क बाली । कवातिभर्यायवमायूषा
साः यमाधकीनालुगदूनसायू॥ गीगुयुसुले पशवस्यवखाः पूरा
वृक्षग॥ यमदाधतन्य॥ मूक्तिनदीर्यावृक्षदायूषाका॥ स्वल्पा
यूषांक्तिनलधयमाध॥ ॥ गम्भीरीर्यायाः ॥ चीनानू॥ चीनगं
गामसिगदडीनायधयरायताफी । विधीष्टीगुगतामागजसमद

२१

शानाककिनावरुताशि॥ म्निग्भीनीलामकीनामृयूजयनवगीसुस्व
वाचायूकडी । शकगिम्याकिती । शवतिस्वदन॥ पूरावत्यायू
नार्या॥ म्नायगीवियूलनरेतिलयूषा रनाडिका । कुवोचधन
वाकाव । समसुसुस्वतागिनी ॥ ललाटदधतयम्य । विष्टूलदे
वतिमिती । वदुतामीसुक्ष्मा । स्वामिनीगीविनिदि । वाज

हंसगतिर्गोचरं सुगन्धीयवर्धिका। विरुही (ध्वजदशनं) गोकन्या
वोरुमाविदुः॥ मधुकाकीचयानार्था न्ये (गमधयनिमलुन्ता)। नयं
साऊनअन्युर्गं नोजानं पृथिवीयति॥ हंसकोचसुवानावीकू १८
नंगकाससुवा। चक्रवाकसुवाचैव हंसधन्यविवर्द्धनी॥ गथी
भामासूनामात्रमित्रीगीमूदूहासिनी। ईश्वरकन्दन्ददशनारु

वदेध्वर्यगिनी॥ विम्बाकावामिभालखा यस्यायानिबल्लिङ्गा
। लक्ष्मिपुतादशीकन्यां सुवाजाकुरुतामूवत॥ ॥ ॐ निकन्याल
कूर्ध्वं आद (धध्यायसमाक॥ ॥ गूथगूलेकूर्ध्वं॥ एविष्णयूना
(६॥ यनस्यनसमावृष्टं कनूनिर्द्युतयवर्धिशिवदूतयिपतीकृति
दासीरुवतिवेदिउ॥ ॥ वेनारु॥ कनिष्ठिकावातदनकर्ववा, स

हीनयस्याऽस्य धर्मे गतायाऽगताथवीगुक् मणी गयस्याऽवदशि
 नीमाकूलतियाया ॥ ॥ हविषायूना (६) ॥ किञ्च भवेत्तमर्ज्याकी
 समस्य द्रुपिष्टिका काकज्यायतिरुक्ति यावन्तीकयिलाच २२
 या ॥ यस्यानुगच्छमानाया कटिकायतिर्ज्यायिक सायूर्गव्यव
 सत्कर्तु यतिद्वनायर्गयः ॥ मावर्गयुक्तायस्या नार्हिसम

नर्विदति। तस्य यत्तं हवद्वक्तन (कस्वमायूर्विनिर्दिष्टं) ॥ यथा
 वक्तव्यतिरुक्ति नास्यावर्गयतिवता। कदावर्गयुक्तेन्दु न
 कदाचिद्विधिष्यति ॥ ॥ सोनकः ॥ जिवाव कटियुक्तेय जघनयवि
 (भावतः) मावर्गद्वययस्या वक्तव्यवर्गयतिवति ॥ ॥ यद्वक्तुः
 वक्तुः ॥ उन्नतवलिनिर्वधः ॥ ॥ सुवर्गकूलनटामिद्यः ॥ यावकम्भवता

मास्य ४, यवश्रीचसमाय ४॥ उत्तरमाव नरेक दा, विषमैर्विषमाथ
या। सुने ४ सूर्यरु नाकारे ४ स्वजिह्वाकृतिरिक्तथा ॥ दाविद्यमशिग
कृति, सि य ४ यूनयच विना ॥ ॥ तथा ॥ दीर्घचचिवूकायस्या ४ सा ३०
धूर्तरुनति प्रिया ॥ ॥ तथा ॥ मूधनाम्नी कृष्णगीवा, स्फुल्लगीवा
चर्वधकी। शिष्टगीवामृतायस्या, दीर्घगीवाचर्वधकी। यावत् उत्तर

गमांसाच, समायास्याकृकाटिका ४। मृदीर्घासायुगस्याच, चिर्वरुर्कानि
जीवति ॥ निर्मासावृद्धमांसाच, शिवालालामसाम् ४। कृटिलाविः
कटाचैव, विस्तीर्णचनस्यग ॥ ऊर्ध्वयागुनिमूनाकी, दीर्घयाचकू
लकृया। जीवयाचयुथूस्रया, याविग ४ मापचधुगा ॥ चरुवसुसूखी
धूर्ता, मधुलस्यासनीरुवन्। मृयजावाजिवकृच, मरुवकृच

दूरुगा ॥ श्रववाकालसूखा, मर्कटास्याश्रयाक्रिया । ध्रुवगाययकावि
स्थः पञ्चावधचवर्जितः ॥ यस्यामुर्दुसमानायाः गद्युजायतकूय
की । नसावसति कोमाय, सुकृन्दाकार्यकाविधी ॥ वकाकीविषमाकीच
धूमाकीयगलाचना । वरुनीयायदानावी, श्वनगायेवदूवराः ॥ ३१
तथा ॥ गीहियस्यायलवानिललाटमूदवीरुचो । गीहिरुक्रयतः

साधु, सुमनंदवचयति ॥ ॥ तथा च ॥ कुलपादाचयाकन्या, सर्वो ग
युचलोत्तमा । कुलरुमाचयाकन्या, दामीगतिदि (गद्यधः ॥ यस्याः
(अत्कटकोपादा, मुख्यविवर्तितवत । उरुप्रोचवचामानि, गीद्य
सावयनेयति । नवामनीनातिदीर्घा, नोद्यरुनीरुतध्रुव । नवाविचि
नवहानी, नकबालसूखीनवः ॥ यस्यायथाधयोववाम, रुमक (धू

गतैलियवा। मसकमिलकावापि सापूर्वपनिवर्तयत् ॥ उद्धतामा
 चयाकन्या वनादस्ववलाचना। यतिरुद्धासाकन्या दासीमर्त्यं
 गच्छति ॥ यस्यायादनखाकान् उद्धेयकषयथा। विहंगमार्थं ३२
 कृषूवर्णं नचिर्वर्णं यतिं ॥ विंगमकीकृपगीताथ नृपवृष
 वसादीर्घज्यार्धकशीलं योद्धी दीर्घवक्रा यविवलदहनाऽसमता

भोवृजिजा। शुक्लीगीसंरुगुरु ४ कृचयूगविवमानासिकावातिदीर्घा
 साकन्यावर्जनीया मृतस्ववदिगानवृत्तं यतिरुद्ध ४॥ नृपयस्या
 ककवृत्तिगलवा सादृशीलास्याचलान्नफलाय। कृषीयस्यागुया
 धमिगेषु तिष्ठसंदिग्धं वंधकीतावदनी ॥ नृपद्वारायिचितिकायां शि
 वाला शुद्धजयनामसवातिमासे। वामावर्तनिम्नमर्त्यं वगुर्ज्वरं

साकारं वा दनं दू॥ रिविनाया॥ सुधौ च लामो विषमान् (लोच) कुं हं दध्वा
 गोविषमायक (हू)। म्मुलाक गाला विषमाय दन्ता ॥ कुं हं यो यो यय
 रुषूमीर्म॥ कया दनं धेव कका कर्ककं, सवी म्मुधा नूक समान विद्वे ३३
 ॥ शुके शिनाले ॥ विषमं धरुम्, वदन्ति नार्य ॥ सूर्य विहारी ना ॥
 कूर्म पृथु नश्ये र्यस्या ॥ निग्न गावयि वरुं गो। वाशी गुली कयो याः

दो, गीक न्याय विवर्जयत् ॥ नदयनामिका यज्ज, ननदीनामिका शु
 ला। वृक यकि हिना म्नी च, वरुं यत्य नूष क्रियी ॥ नक गार्या नदीना
 म्नी, वृक यवर्तनामिका। नका वव रूया नां च, गीक न्यां नाध रुद
 ध ॥ नाध रुक यिली कन्या, नाधिका गिन वा मिनी। नलामिका नाः
 गिलामी, नवा चाला वर्यि गली। वाल्य च विधवा शोभ, वू ह्यादि जाग

काकयागमसविचिन्तयत् ॥ वयलाचंचलावेव, निर्यमीयद्विबीक
 क्षा। वृक्षाशानयशकाच, वानबीगीविनिर्दिष्टात् ॥ गीतवादिगुच्छन्द
 न, यत्तुर्द्वमसतसदा। वृक्षाशानयशकाच, मोनूयिगीविनिर्दिष्टः ३५
 (क्षत) ॥ उच्चिद्यमानसायागु, तथाकद्रकशाविनी। निर्यदिनमिरा
 हवि, वारुसीगीविनिर्दिष्टात् ॥ (क्षोवावावयविगुच्छा, कुलाद्वया

शयिकबी। यस्मिन्मलदिग्भूमी, यिष्ठाविगीविनिर्दिष्टात् ॥ यच्छः
 न्नकूवूर्तयाय, सयवाद्यंचवकति। द्वादयंचनजानाति, साङ्गाविगी
 विनिर्दिष्टात् ॥ यनकनचिदंगन, सीसंयम्या ४ यवद्धत ॥ गद्दशीता
 दृष्टीविश्राण, नसाकल्याणमर्हति ॥ यागुक्कूवोष्टनसमून्नतन, वृक्षा
 यकशीकलरुषिवा ॥ याथाविबूयास, हवन्निदावा, यणकनिमृगु

क्षवसन्नि॥ ॥ ॐ तिष्ठति विनामनीकन्यालकहंशुशाशुर्नवगुद
 (आध्यायसार्क॥ ॥ ॥ ॥ गूथम्वप्राध्याय॥ ॥ स्वप्राध्याय्यव
 कासि यथासर्वनराधिर्न। गूथिक्कागः ४ म्वनूयानी तवाधर्कः ३७
 नरुतव॥ म्वप्रमुयथमयाम सैवत्सनेरुत्तयदः ४। द्वितीयेवाष्ट
 हिमसि मिहिमसिमि यानिक॥ वगुर्थवाड्वासासनदृश्यते

नागसंशयः ४। गूथः (क्षदयवलायां सद्यः ४ म्वप्ररुत्तगवत्॥ तस्माच्चर्त्त
 रानम्वयः यस्यान्वाधानविशत। यथयमंगलंकृत्वा यस्यान्यम्ववने
 गुर्त। गूथउर्ध्वयवकासि यथायाथाकृयानिक॥ गूथवाकनेवकृयवकृत्त
 वाधर्त यसाद(क्षलायवतम्यगीती। गूथवृक्षमानयतिगृक्षवीधर्त गुः
 क्तावृदिताध्ववमर्थलार्त॥ म्वप्रगवत्कृमिगयूर्ध्वदका न(क्षकृती

गणविहस्यधं च। विहस्यलयावृदितीक्ष्णं च। स्वयं यमगम्या गमनं च ध
 न्यं॥ यमुपस्थितिस्त्वप्राक्तं, नाजनं कूजं बंधुयं सुवर्धुं बज्जं गं गं क
 र्णं चतुर्वर्धं॥ श्रीनिधिरुलिनं वृक्षं, मकाकिथावत्रा रुति। मूयिदा
 सकलं जातं॥ सायिनाजा रावि श्रुति॥ दीयमन्तं रुनं पक्षं, कन्यां च
 र्णवर्धं धर्जं। यमुपस्थितिस्त्वप्राक्तं, तस्य श्रीसर्वतामूखी॥ मानूषा

३३

नां च मां सानि, स्वप्राक्तं यमुपस्थितिं। रुविगानि च यकानि, इह गतस्य च
 गुह्यं॥ यादयश्च इति लाशु, ४ सुरुं सैवाकुरुक (६)। बाञ्छं इति सुरुं सैवा
 लशुं सुरुं इति लाशु॥ मूले च यमं यमु, यमं न गलं मयवा। अम
 म्या नमो ललाजी, न गवयार्थं वा सवत्॥ कर्णं वा पानं दं चैव, लक्ष्मी
 यश्च इति वृक्षं। मूले च यमं यमु, मधुनं तस्य निधि (६)॥ नोर्क

वात्राकृतयसु, शिनीनष्टं तं मूलं ब्रह्म। युवासंनिधिः (हाह) स्यात् प्रीतिमागम
 नीयते ॥ वलाकीकृष्टं टीको वी, लब्धो यश्च यतिवृद्धा। स तार्याल्लभते द
 शी, सधनं यियवादिनी ॥ नित्यमस्य चिद्विद्वद्, पुतिमीयवि (हावत) ॥ ३१
 यवहावययस्य, धनं च विपुलं श्वर ॥ ग्राह्यसमष्टुलं स्वयं च नृ
 वायदिव्यमिति। वाग्विस्मयकवागी, स्ववागी प्रीयमायूयात् ॥ यमु (३२)

कनस्यार्थः, दस्योदकि (हाहुत)। धनलाशा श्वरस्य, संपूर्णदशमदि
 नं ॥ निगलं विविधं च ॥ कासगचयून ४ यून ४। यूरश्च ४। यतिं तस्य य
 तिसृयविनिधिः (हात) ॥ वृधिवीधिवयन्मय, सुवाम्नाविकथं च ॥ वाक्
 (हाल्लगतविद्या, सितवैराथा धनं ॥ श्रीवैधिवरित्य ४ स्वयं, सुरुलं दारु
 लीकरी। सामयानं श्वरस्य, ग्रायूर्वदुगुसादि (हात) ॥ यमु सधनं ज
 ३२

गत्य, सुंजीगंदधियायसं। विस्तीर्ण्योक्त्रयागं, यार्थिवासीनसंशय
 शडन(गावृष्टिक(ष्टिव, जलोकादृष्टयदि। विजयस्थार्थगल्लाग
 स्थ, पूगल्लाशाशवदिति॥ दधिदृष्टुशवदृष्टि, (ग्नधूसैष्टधनागम १८
 १। यवेयकूगमविद्या, गल्लागसिद्धार्थकनगु॥ रुलिगैरुलिगीविद्या
 त्यधिगवृद्धिसाधूयागु। धूसायानैकैर्लीगैवा, धाययनैष्टियावहं॥ ग्ग

शनैःशयनयान, शनीववाकनगुरु। कलसानविवृद्धच, गम्यशी१म
 र्वतामूखी॥ दवताष्ट्यदिजागव४, यितत्रालिंजितरुथा। यद्वदन्ति
 नवैस्वय, गरु(थेवशवदिति॥ शुक्रामृवधवानावी, मुकुर्गंधानूलं
 यति। मूवगृर्तिकैर्यस्वय, गम्यशी१सर्वतामूखी॥ यीर्ताववधवानावी
 यीर्तागंधानूलयति। मूवगृर्तिकैर्यस्वय, गम्यशी१सर्वतामूखी॥ सर्वा

गुह्यानिष्ठुः ॥ रुतानि, कथ्यां सरु सास्त्रि कया लवर्कुः । कथ्यानि सर्वा
 नित ॥ रुतानि, ॥ गुरुनि दव द्विज वा डि वर्कुः ॥ लेल या सा दना ग
 नी, वषरा नी च वा रुनी । रु, मा नी ॥ श्वरा य व्या नी, ग जानी च तथा दिः ३२
 ज ॥ रु हा रु स रु वा ना री, गथा च व दू वा रु ना । गथे व व दू क्षी व न्त यः
 विना रु व स व च ॥ ग रु ध जालि ग न री, ग रु कान कि या तथा । रु मो न

कथ्यानी च, ग गु ना री व ध क्रिया ॥ जथा विवा रु य त च, सं ग्राम च तथा
 दि ऊ । रु हा रु न रु मा री स म्य, म न्म स्या या च हा स्य च ॥ दर्शन नू धि व स्या
 पि, म्ना नी वा नू धि व ध च । सु वा नू धि व स श्या नी, य नी की व स्य वा य थ ॥
 म रु हा व रु न रु मो, नि र्मा नी ग ग नी तथा । यौ म रु व न वा रु न स रु, स
 रु धी नी तथा ग वी ॥ मी रु नी रु मि नी ना च, व ल वा नी त थे व च । या सा

दत्तेवविषया गुनस्यस्यतथाशुभं ॥ गीरसान्तरिषकंच गवीष्टमा
 दकनच । चन्द्राकुष्टनवाष्ट्वे वाजान् कुर्यावाश्वपदीकिर्ग ॥ वाश्व
 शिष्यकस्यगथा कुदनीशिवसायिवो । मयर्धंवाद्रि लाहस्य वाद्रिः ५०
 वाश्वगुरुदिव ॥ लोचुष्ट वाजुलिङ्गमता । गलीवाश्वदिवदनी । ग
 (श्वदकानीगवर्ध) गथाविषयसर्लघनं ॥ दक्षिणीनीगवीश्वेव नावीनी

वसवागुरु । गवाहर्नवाश्ववत्थ वादनय शुभपद ॥ वनस्त्रीमुगला
 स्य गथालिङ्गनमवत् । निगवर्ध धर्तधर्न्य गथाविष्टानुनयन
 । जीविर्गहमियालाना । मद्रुवासयिदहन । दर्शनादवताञ्जनी विमा
 नानीगथामुसाग ॥ शुभान्यथेतानिनवस्यदृष्ट्वा यात्रागियन्ताधुव
 मर्थलारी । मृगानिधर्मरू मृगावधि ४ म्या द्याध्विमाफुगुगथाय

प्रायि॥ नक्की ववध वाता नी नक्की गंधान लयना। मूव गुरु गिर्य स्वप्न निर्य
 याधिविनिर्दिष्टा॥ दक्षा यस्य विधीयन्त मया कनिय गति वा। धन ना
 ल्हा नव वस्य यीठा वायि हा नी वग॥ अगि दवन्ति र्य स्वप्न ४८ मिता ५०
 मृता यी वा। वान वा वा वा वा वा रु गत्य वा उ क वा रु यी॥ मूली गिर मूली ल
 न घुक्त यथ सायि वा। मू व न वा रु अ न्य न याधिविनिर्दिष्टा॥

नरु का। ये द्वा न्क गायन्ति वरु सन्ति व। उरु वं च व कू वी न स न वं
 गायन्ति दिष्टा॥ स्व ना द स दि धे य म् यानि सा वा रु गी न व ४। मूली गि
 मूली ल न स मे र्य जी धु मा य् यान् ॥ द व गा य न् न र्य गि गायन्ति वरु
 सन्ति व। मूली गि यानि धा वन्ति द व म् ग वि न ध गि॥ ना हि वि न्या न्य
 गायन्ति रु द व रु मू व ४। व धू न मू व की स्या नी मू व न ग य गी क था

॥ मलिताम्रवधवित्रं मलयनीयं कदिग्धता । उच्चान्यथमनकुचेव खान्ता
वाहनमवच ॥ मूलपयूकं लाकानीं तथावाभारुनीकिया । एकधीयकि
मीरणीं गोलम्यकडीवस्यत्र ॥ नरुनीरुसनं चैव विवाहागीतमवच । ५२
तकुवाश्रितिकीतानीं वाशानामपिवादनं ॥ श्रीगोवर्धनसिंहासधर्मना
नं (गमयका) वधा । वादादकनचतथा । महीनायनवायथ ॥ मालु

४ प्रवः ॥ गालावाहनमवच । एकध्वजाक्रियतानं यतनं
मिसुरया ॥ दीव्यकवीरुकोमाना मूल्यागानीचदर्शनं । एवमादि
मिचान्यानि स्वप्रातिपदिवर्जयत ॥ एवान्तपतनं धन्यं यून ४ मूय
प्रकं तथा । कार्यमनार्तिरुहोमि । वाक्काहानीचयूजनं ॥ मुक्तिध्ववा
मूदवस्य । तथाकस्यचयूजनं । गऊन्दमाकडावर्धं कुर्य ३४ स्वप्न

नाशनै॥ वक्तु चन्दनकाशानि दृगयुक्तानि ह्यस्य गायत्यस्य
 रुमाधि जयदृष्टमप्रनाशनै॥ चिन्तास्वरुन (शकं न व्याधिगुम्
 ववायुनः। कामान्तरु कचिरुन स्वप्नरु ललाशुवत॥ ॥ ५३
 नैकीति॥ ध्वजविवचिरुन चिन्ताम (हो) स्वप्नरु ले समाप्य॥
 ॥ समस्त॥ अवधकपुदगमि शुक्रवाव धक्क धयम्क कसिद्धि

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1.018

ASHA ARCHIVES



1.018